राजस्थान के केन्द्रीय संरक्षित देवालयों की एक झलक

लक्ष्मीनारायण मंदिर, आमेर (जयपुर)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर

जगत शिरोमणी मंदिर, आमेर (जयपुर)

"हम साथ मिलकर इस ऐतिहासिक विरासत को इसके अपने ऐतिहासिक एवं विशिष्टता के साथ संरक्षित करें। हमें इसके परिवेश एवं विशिष्टता के साथ छेड़छाड़ करने का कोई अधिकार नहीं है। हम इन्हें विश्वासपूर्वक संरक्षित करने तथा भावी पीढ़ी को सौंपने हेतु कटिबद्ध हैं।"

द्वारा
अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
70/133-140, पटेल मार्ग, मानसरोवर
जयपुर-302020 (राज.)
दूरभाष : 0141-2784532-34
फैक्स : 0141-2784532
ई-मेल : asijpr@yahoo.co.in

प्रकाशन
विश्व धरोहर सप्ताह (19-25 नवम्बर, 2008) के अवसर पर

वर्गाकार मण्डप एवं मुखमण्डप युक्त है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। इसका शिखर साधारण एवं अलंकरण विहीन है। वर्तमान में यह मंदिर बीसलपुर बाँध के जलाशय के किनारे पर स्थित है।

□□□

कृपया स्मारक परिसर में निम्नलिखित गतिविधियाँ न करें -

1. आग व ज्वलनशील पदार्थ जलाना।
2. खाना बनाना, गोठ इत्यादि करना।
3. इमारत को खरोचना, नाम आदि लिखना व अन्य हानि पहुँचाना।
4. गन्दगी फैलाना।
5. परिसर में स्थित उद्यान में फूल तोड़ना व क्षति पहुँचाना।
6. मीटिंग व शोरगुल करना।
7. स्मारक की पवित्रता से छेड़छाड़ करना।
8. रेलिंग अथवा स्मारक के टूटने योग्य भाग पर बैठना।

कृपया ध्यान दें :

संरक्षित स्मारक के 100 मीटर के प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी भी प्रकार का पुनर्निर्माण अथवा खनन कार्य निषिद्ध है। उससे परे 200 मीटर तक विनियमित क्षेत्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति प्राप्त करके उपर्युक्त कार्य करवाए जा सकते है।

किसी भी प्रकार की सहायता एवं पूछताछ हेतु सम्पर्क करें :

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
70/133-140, पटेल मार्ग,
मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)
दूरभाष : 0141-2784532-34
फैक्स : 0141-2784532
ई-मेल : asijpr@yahoo.co.in

"याद रहे - वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वे प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक निधियों को अक्षुण्ण रखें तथा आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रूप में सौंपें।"

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना 1861 ई. में हुई। सर एलेक्जेंडर कनिंघम उस समय इसके पुरातात्विक सर्वेक्षक थे। उस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का कार्य प्राचीन गौरव तथा राष्ट्रीय धरोहर के समृद्ध तथा गौरवपूर्ण अतीत का परिरक्षण, अन्वेषण, गूढ़ लिपि का अर्थ निकालना तथा इसे व्यक्त करना था। अपनी स्थापना के समय से ही यह संगठन पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्र जैसे-प्रागैतिहास, आद्यैतिहासिक, ऐतिहासिक पुरातत्व, कला, वास्तुकला, पुरालेख, मुद्राशास्त्र, अन्वेषण उत्खनन, संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण, स्थल-संग्रहालय की स्थापना, पुरावशेष का विनियम तथा नियंत्रण, संपूर्ण देश के प्राचीन स्मारकों के परिवेश के सौन्दर्यीकरण के लिए बागवानी जैसे पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से शोध कार्य करने में संलग्न रहा है।

वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण देश के सभी राज्यों में स्थित विभिन्न मण्डलों, उपमंडलों, उत्खनन शाखाओं, स्थल संग्रहालयों, रसायन शाखा एवं उद्यान शाखा के माध्यम से राष्ट्रीय धरोहरों की देखभाल करता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन दो अधिनियमों-प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 तथा पुरावशेष एवं कलानिधि अधिनियम, 1972 तथा उनकी नियमावली के माध्यम से करता है।

जयपुर मण्डल की स्थापना 1985 में हुई थी जिसका क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण राजस्थान है। वर्तमान में इस मण्डल के अंतर्गत 160 स्मारक/स्थल संरक्षित घोषित हैं जिनमें किले, महल, देवालय, मस्जिद, अभिलेख, मूर्तियाँ, प्राचीन व उत्खनित स्थल, बौद्ध गुफाएं आदि हैं। जयपुर मण्डल के अंतर्गत दो संग्रहालय हैं जिनमें से एक विश्व प्रसिद्ध हड़प्पाकालीन उत्खनित स्थल कालीबंगा में स्थित है तथा दूसरा डीग के राजमहलों में है। यद्यपि जयपुर मण्डल में अन्य महत्वपूर्ण स्मारक/स्थल संरक्षित हैं लेकिन इस पुस्तिका के माध्यम से पर्यटकों को कुछ ही महत्वपूर्ण देवालयों/मंदिरों की जानकारी यहाँ दी जा रही है।

गोपीनाथ मन्दिर

भानगढ़, जिला अलवर

भानगढ़ की स्थापना आमेर के शासक भगवानदास ने 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में की थी जो बाद में माधोसिंह की रियासत का केन्द्र बिन्दु रहा। यहाँ स्थित चार मंदिरों में गोपीनाथ मंदिर सबसे भव्य एवं सुन्दर है। ऊँचे चबूतरे पर निर्मित यह मंदिर क्षैतिज योजना में गर्भगृह, मण्डप एवं मुखमण्डप युक्त है। पूरा मंदिर काफी ऊँचे चबूतरे पर बना है जिसमें पूर्व की ओर सीढ़ियां बनी हैं।

महाकाल मन्दिर

बिजोलिया, जिला भीलवाड़ा

बिल्यावली के नाम से विख्यात एवं उपरमाल पठार क्षेत्र में स्थित बिजोलिया में महाकाल, हजारेश्वर एवं उन्धेश्वर मंदिर एक ही समूह में स्थित है। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध महाकाल मंदिर सम्भवतः 13वीं सदी में बना, इनमें सबसे प्राचीन है जो गुजरात शैली में निर्मित है। यह दोहरे गर्भगृह युक्त है जिसका संयुक्त सभामण्डप है तथा प्रवेशद्वार मण्डप से है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना 1861 ई. में हुई। सर एलेक्जेंडर कनिंघम उस समय इसके पुरातात्विक सर्वेक्षक थे। उस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का कार्य प्राचीन गौरव तथा राष्ट्रीय धरोहर के समृद्ध तथा गौरवपूर्ण अतीत का परिरक्षण, अन्वेषण, गूढ़ लिपि का अर्थ निकालना तथा इसे व्यक्त करना था। अपनी स्थापना के समय से ही यह संगठन पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्र जैसे-प्रागैतिहास, आद्यैतिहासिक, ऐतिहासिक पुरातत्व, कला, वास्तुकला, पुरालेख, मुद्राशास्त्र, अन्वेषण उत्खनन, संरचनात्मक संरक्षण, रसायनिक परिरक्षण, स्मारक-संग्रहालय की स्थापना, पुरावशेष का विनियम तथा नियंत्रण, संपूर्ण देश के प्राचीन स्मारकों के परिवेश के सौन्दर्यीकरण के लिए बागवानी जैसे पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से शोध कार्य करने में संलग्न रहा है।

वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण देश के सभी राज्यों में स्थित विभिन्न मण्डलों, उपमंडलों, उत्खनन शाखाओं, स्मारक संग्रहालयों, रसायन शाखा एवं उद्यान शाखा के माध्यम से राष्ट्रीय धरोहरों की देखभाल करता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन दो अधिनियमों-प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 तथा पुरावशेष एवं कलानिधि अधिनियम, 1972 तथा उनकी नियमावली के माध्यम से करता है।

जयपुर मण्डल की स्थापना 1985 में हुई थी जिसका क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण राजस्थान है। वर्तमान में इस मण्डल के अंतर्गत 160 स्मारक/स्थल संरक्षित घोषित हैं जिनमें किले, महल, देवालय, मस्जिद, अभिलेख, मूर्तियाँ, प्राचीन व उत्खनित स्थल, बौद्ध गुफाएं आदि हैं। जयपुर मण्डल के अंतर्गत दो संग्रहालय हैं जिनमें से एक विश्व प्रसिद्ध हड़प्याकालीन उत्खनित स्थल कालीबंगा में स्थित है तथा दूसरा डीग के राजमहलों में है। यद्यपि जयपुर मण्डल में अन्य महत्वपूर्ण स्मारक/स्थल संरक्षित हैं लेकिन इस पुस्तिका के माध्यम से पर्यटकों को कुछ ही महत्वपूर्ण देवालयों/मंदिरों की जानकारी यहाँ दी जा रही है।

गोपीनाथ मन्दिर

भानगढ़, जिला अलवर

भानगढ़ की स्थापना आमेर के शासक भगवानदास ने 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में की थी जो बाद में माधोसिंह की रियासत का केन्द्र बिन्दु रहा। यहाँ स्थित चार मंदिरों में गोपीनाथ मंदिर सबसे भव्य एंव सुन्दर है। ऊँचे चबूतरे पर निर्मित यह मंदिर क्षेतिज योजना में गर्भगृह, मण्डप एंव मुखमण्डप युक्त है। पूरा मंदिर काफी ऊँचे चबूतरे पर बना है जिसमें पूर्व की ओर सीढ़िया बनी है।

महाकाल मन्दिर

बिजोलिया, जिला भीलवाड़ा

विन्ध्यावली के नाम से विख्यात एंव उपरमाल पठार क्षेत्र में स्थित बिजोलिया में महाकाल, हजारलिंगेश्वर एंव उन्मेशवर मंदिर एक ही समूह में स्थित है। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध महाकाल मंदिर सम्भवतः 13वीं सदी में बना, इनमें सबसे प्राचीन है जो गुजरात शैली में निर्मित है। यह दोहरे गर्भगृह युक्त है जिसका संयुक्त सभामण्डप है तथा प्रवेशद्वार मण्डप से है।

घाटेश्वर मन्दिर

बाड़ोली, जिला चित्तौड़गढ

रावतभाटा के समीप बाड़ोली में स्थित मंदिर समूह में घाटेश्वर मंदिर सबसे भव्य, सुन्दर एवं कलात्मक है। 10वीं सदी में प्रतिहार शैली में निर्मित यह मंदिर शिव को समर्पित है। क्षैतिज योजना में यह गर्भगृह, अन्तराल एंव मुखमण्डप युक्त है। मुखमण्डप छह स्तम्भों पर टिका है। मंदिर का बाह्य भाग मूर्तियों से सुसज्जित है एंव कलात्मक है।

कालिकामाता मन्दिर

चित्तौड़गढ दुर्ग, जिला चित्तौड़गढ़

राजा मानमौर्य द्वारा 8 वी सदी में निर्मित यह मंदिर मूलरुप से सूर्य को समर्पित है लेकिन वर्तमान में कालिका माता की पूजा-अर्चना की जाती है। योजनाकार में यह पंचरथ गर्भगृह,

देवालयो के स्थल का मानचित्र, राजस्थान

अन्तराल, सभामण्डप एवं मुखमण्डप युक्त है। मंदिर के छत का भाग बाद में बना है। इसके स्तम्भ नक्काशी युक्त है

कुम्भश्याम मन्दिर

चित्तौड़गढ़ दुर्ग, जिला चित्तौड़गढ़

मूलरूप से कालिका माता मंदिर के समकालीन एवं समान योजनाकार में निर्मित यह मंदिर भी गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप एवं अर्द्धमण्डप युक्त है। आन्तरिक योजना में यह बीस अलंकृत स्तम्भों पर टिका है। महाराणा कुम्भा ने इस मंदिर के शिखर का जीर्णोद्धार करवाया एवं विष्णु को समर्पित किया जिसके कारण इसे कुम्भश्याम के नाम से जाना जाता है। मंदिर के सम्मुख एक गरुड़ मण्डप बना है।

मण्डलेश्वर मन्दिर

अर्थुना, जिला बाँसवाड़ा

11–12वीं सदी में बागड़ के परमार शासकों की राजधानी रही अर्थुना जैन एवं शैव

धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ दोनों धर्मों के कई मंदिर निर्मित है। प्रमुख मंदिरों में परमार शासक चामुण्डराय द्वारा अपने पिता की यादगार में 1080 ई. में बनाया गया शिव मंदिर है जो मण्डलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। ऊँची जगती पर स्थित यह मंदिर सप्तरथ एवं निरंधार है। इसमें वर्गाकार गर्भगृह, अन्तराल तथा आलिन्दों से युक्त सभामण्डप एवं मुखमण्डप है। मुखमण्डप के सामने एक नन्दी मण्डप है। सभामण्डप में विक्रम संवत् 1136 (1080ई.) का एक अभिलेख है। यह स्थान शैव धर्म के लकुलिश सम्प्रदाय से सम्बंधित रहा है।

महानाल मन्दिर

मेनाल, जिला चित्तौड़गढ़

11–12वीं सदी में चाहमानों के शासनकाल में मेनाल शैवधर्म के लकुलिश सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है। वास्तुकला की भूमिज शैली में 11वीं सदी में निर्मित यह मंदिर ताराकार पंचरथ योजना पर आधारित है जो गर्भगृह, अन्तराल एवं रंगमण्डप युक्त है। उर्ध्वाकार में शिखर के मुख्य भाग के अंगशिखर नीचे के भाग के समान हैं।

रंगमण्डप की छत संवर्णा शैली में बनी है। मंदिर के सम्मुख नन्दीमण्डप अलग से बना है।

सोमनाथ मन्दिर

देवसोमनाथ, जिला डूंगरपुर

12वीं सदी में मालवा शैली में निर्मित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इसका गर्भगृह धरातल से 2.7 मीटर नीचे है तथा ऊपर तीन मंजिला है जिसके ऊपर शिखर बना हुआ है। इसका अन्तराल संकरा है तथा संवर्णा

छत से युक्त सभामण्डप में तीन ओर से प्रवेश है। मंदिर के अन्दर महारावल सांवलदास (1588ई.) एंव महारावल गोपीनाथ के दो अभिलेख उत्कीर्ण है

श्री जगत शिरोमणी मन्दिर

आमेर, जिला जयपुर

इस मंदिर का निर्माण राजा मानसिंह प्रथम की पत्नी रानी कनकावती ने अपने पुत्र जगत सिंह की यादगार में 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में करवाया था। पश्चिमाभिमुख यह मंदिर राधा कृष्ण को समर्पित है जो योजनाकार में गर्भगृह, अन्तराल एंव मण्डपयुक्त है। इसके दोनो पार्श्वों में जालीदार बहिर्निष्ट खिड़कियाँ है। पूरा मंदिर एक ऊँची जगती पर बना है जो काफी अलंकृत है। मंदिर के सम्मुख अलग से एक भव्य एंव अति अलंकृत गरुड़ मण्डप है। मंदिर में प्रवेश हेतु एक भव्य तोरणद्वार है।

सास-बहू मन्दिर
नागदा, जिला उदयपुर

सासबहू के नाम से प्रसिद्ध इन दो वैष्णव मंदिरो का निर्माण दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में करवाया गया था। सास के नाम से प्रसिद्ध बड़ा मंदिर दस लघु मंदिरों से एंव छोटा बहु मंदिर पाँच लघु मंदिरों से घिरा हुआ है। दोनो मंदिर योजनाकार में पंचरथ गर्भगृह, अन्तराल, पार्श्व आलिन्द युक्त सभामण्डप एंव मुखमण्डप युक्त है। बाहरी दीवारों पर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, बलराम आदि की प्रतिमाएं है। उभरी प्रतिमाओं में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, अप्सराएँ, क्रीड़ायुक्त पैनल एंव रामायण से सम्बन्धित दृश्य हैं। मंदिरों में प्रवेश एक तोरण में से होकर होता था।

बावन देवरी मन्दिर
कुम्भलगढ़ दुर्ग, जिला राजसमन्द

इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एकमात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। यह मंदिर समूह चारदीवारी से घिरा है जिसमें सभी ओर लघु मंदिर हैं जिनका द्वार अन्दर की ओर आंगन में खुलता है। परिसर में स्थित आंगन के मध्य में अपेक्षाकृत दो बड़े मंदिर हैं। आगे के सबसे बड़े मंदिर में गर्भगृह, अंतराल एवं खुला सभामण्डप है। गर्भगृह के ललाटबिम्ब पर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु छोटे मंदिर मूर्तिविहीन हैं।

बीसलदेव मन्दिर
बीसलपुर,जिला टोंक

गोकरणेश्वर अथवा बीसलदेव मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चाहमान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा करवाया गया था। योजनाकार में यह पंचरथ गर्भगृह, अन्तराल,

बावन देवरी मन्दिर

कुम्भलगढ़ दुर्ग, जिला राजसमन्द

इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एकमात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। यह मंदिर सम्पूर्ण चारदीवारी से घिरा है जिसमें सभी ओर लघु मंदिर हैं जिनका द्वार अन्दर की ओर आंगन में खुलता है। परिसर में स्थित आंगन के मध्य में अपेक्षाकृत दो बड़े मंदिर हैं। आगे के सबसे बड़े मंदिर में गर्भगृह, अंतराल एवं खुला सभामण्डप हैं। गर्भगृह के ललाटबिम्ब पर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु छोटे मंदिर मूर्तिविहीन हैं।

बीसलदेव मन्दिर

बीसलपुर,जिला टोंक

गोकरणेश्वर अथवा बीसलदेव मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चाहमान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा करवाया गया था। योजनाकार में यह पंचरथ गर्भगृह, अन्तराल,

वर्गाकार मण्डप एवं मुखमण्डप युक्त है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। इसका शिखर साधारण एवं अलंकरण विहीन है। वर्तमान में यह मंदिर बीसलपुर बाँध के जलाशय के किनारे पर स्थित है।

□□□